गीत-कविताओं-का-संकलन

संघर्ष की पुकार

छत्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ

भिलाई - उरला - टेडेसरा - बलौदा बाजार के श्रमिक आज एक जीवनपथ संघर्ष में शामिल हैं।

लोक साहित्य परिषद

प्रस्तुत करता है

इस संघर्ष की गीत कविताओं का यह संकलन

दो शब्द	1
मजदूर साथी करे पुकार..... इंकलाब जिंदाबाद	3
आज की ताजा खबर.....	6
कैइसे कानून बनायेस सरकार बाबू	8
नारी कहली नर से परदा हटाव घर से	10
लाल हरा झंडा हमारा	11
किसका कानून, किसका नेता	12
कहानी : सरकार मालिक की.....	12
सरकार के घर में अंधेरी रात	13
लाल हरा झंडा के राहत ले, गरीब के गरीबी भगाना हे	14

दो शब्द

पेश है भिलाई मजदूर आंदोलन से उभरी कविता और गीतों का एक संकलन। पिछले करीब एक साल से भिलाई, उरला, टेडेसरा व बलौदा बाजार के श्रमिक एक एतिहासिक संघर्ष में शामिल है। सिर्फ जीने के लायक वेतन, स्थाई नौकरी और बोनस आदि सुविधाओं की मांग को लेकर ही नहीं, बल्कि व लड़ रहे हैं एक ऐसे खुशहाल जिन्दगी बेहतर समाज के सपनों को दिल में लेकर। संकलन के दो पहली कविताओं को छोड़कर बाकी सभी गीत मजदूरों ने ही लिखी है।

संघर्ष (वर्ग संघर्ष) से नया समाज की सृष्टि होती है, जन संघर्ष से जन्म लेती है नयी संस्कृति, नयी गीत, नयी कविता, नयी कहानी। हर जन आंदोलन से जुड़ी हुई गीत, कविताएं होती है। आंदोलन एक दिन समाप्त होता है, लेकिन आंदोलन से उभरी गीत-कविता आने वाली पीढ़ी को संघर्ष के लिए प्रेरित करते रहती है। अन्याय के खिलाफ शोषण के विरूद्ध जन आंदोलन की कहानियों से, गीत-कविताओं से जनता शिक्षा लेती है।

दल्ली-राजहरा के खदान -मजदूरों के संघर्षों से भिलाई के औद्योगिक मजदूर शिक्षा लिये हैं, दल्ली-राजहरा के आंदोलनों पर लिखी गई का. फागूराम यादव की गीत उन्हें संघर्ष के मैदान में उतरने के लिए प्रेरित की है। भिलाई आंदोलन के गीत भी दूसरे स्थानों के मजदूरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

मजदूर आंदोलन की शुरूवात तो फैक्ट्रीसे होती है, लेकिन आंदोलन सिर्फ फैक्ट्री में ही सीमित नहीं रहता है। आंदोलन में मजदूर के परिवार के लोग, उनके आत्मीय परिजन भी शामिल हो जाते हैं। इस संकलन के गीतों में भी हमें यह देखने को मिलेगा।

संकलन के गीत-कविताओं में से कुछ हिन्दी में लिखी हुई है, तो कुछ छत्तीसगढ़ी में, कुछ भोजपुरी में। लेकिन हर कविता में शोषकों के प्रति तीव्र घृणा और एक नयी स्वप्नशील समाज व्यवस्था की कल्पना हमें देखने को मिलेगी

जब कोशिल्याबाई लिखती है, "कइसे कानून बनायेस सरकार बाबू" तब राम लखन गरज उठते हैं "कटबो हम पापिन के गरदनवां।" भीमराव

बागड़े पूजीपतियों को व्यंग करते हैं "पगला गया है मूलचंद केडिया.....," कमलेश शुक्ला सपना देखते हैं "मजदूरों का ही बनेगा सरकार.....।" मकसूदन आव्हान करते हैं "आवो साथी हम संगठन बनायें।" संकलन की हर एक गीत अपनी-अपनी विशेषताओं से भरपूर है।

इस संकलन में हम गीतकारों की सभी गीतों को शामिल नहीं कर पाये हैं। इन गीतकारों के अलावा भी सृष्टा होंगे जिन्होने आंदोलन के दौरान नयी सृष्टि की है। उन सभी सृष्टियों को हम फिर आपके समक्ष पेश करेंगे संघर्ष की गीतों का दूसरा संकलन में।

लाल जोहार !

सम्पादक

मजदूर साथी करे पुकार.....
इन्कलाब जिन्दाबाद !

भाजपा सेठों की पार्टी है,
मुनाफे में थोड़ी सी भी कमी
लालची उद्योगपतियों और धन्ना सेठों को निर्दयी बना देती है।
इसीलिए, सन् 1997 में
भाजपा के मुख्यमंत्री सखलेचा ने दल्ली-राजहरा में
मजदूरों पर गोली चलवाई थी।
पुनः भाजपा के मुख्यमंत्री कैलाश जोशी ने सालभर के भीतर
अप्रेल 1978 में बैलाडीला में मजदूरों पर गोलियाँ चलवाई।

फिर से आ गयी भाजपा की सरकार,
लेकर गोलियों का उपहार,
पटवा जी की गोली.....
अभनपुर में मजदूरों पर चली, मई 1990 में।
अनूपपुर भी दहल उठा था
पटवा जी की गोली से 1990 नवंबर में।

1977, नियोगी जी के नेतृत्व में,
राजहरा की बात थी,
इसलिये मैं खामोश था।
1978, दूर.... शालवानों के द्वीप में,
बैलाडीला में हलचल हुई,
इन्द्रजीतसिंह, एटक ने मोर्चा सम्हाला था,
उनसे भला क्या मेरा ताल्लुक ?
1990, अभनपुर में मजदूरों के अगुवा,
टी.यू.सी.आई. के फिलिप कोशी थे,
तब भी हम चुप रहे।
अनूपपुर में इंटुक वालों पर गोली चली,
तब भी दूर की बात जानकर

हम खामोश रहे।
अब,
सेठों की पार्टी भाजपा,
भाजपा की सरकार,
सरकार की पुलिस,
इस पुलिस ने दस्तक दी है,
मेरे दरवाजे पर.....
मेरा साथ कौन देगा ?

मुझे तो कोई दिखता भी नहीं है।
क्या मजदूरों को सिखाने के लिये सेठों का हमला होता रहेगा
लूट का राज चलता रहेगा ?
यह सोचने का वक्त है।
यही निर्णय लेने का वक्त है।

बी.एस.पी. के मैनेजिंग डायरेक्टर, धर्मपाल गुप्ता, सिम्पलेक्स,
बी. आर. जैन, विजय केडिया और खेतावत ने एकता बनाई है।
मजदूरों को कुचलने के लिये,
गुण्डों को लगा दिया है,
और गुण्डों की हिफाजत
साथ ही मजदूरों की मरम्मत के काम को
अंजाम देने के लिये
गुण्डों के साथ लगी पुलिस
"देश भक्ति और जनसेवा"
के नाम पर।
जब बी.जे.पी. और बी.एस.पी. एक हो जाते हैं;
तब भिलाई की मजदूर बस्तियों में;
आतंक का राज होता है,
चाकू और भाले चला करते हैं मजदूरों पर
मजदूर नेताओं को मड़ाया जाता है

जेल की काली कोठरी में,
और, स्थाई नौकरी
जीने लायक वेतन मांगने वालों को
भूख से तड़पाया जाता है।

यही सोचता हूँ,
सोच की तीव्रता से भींच जाती हैं मुट्ठियाँ,
भूख की मार से तन भले कमजोर है
पर मरा नहीं है मेरा आत्म विश्वास
और उसी विश्वास के बल पर
मेरी बंद मुट्ठी लहरा उठती है आसमान में।
जेल की कोठरी से
निस्तब्ध रात्रि में सुनवाई देती है
भिलाई के दूर-दराज की मजदूर बस्तियों से
उठती आवाज
इंकलाब जिंदाबाद ।। इंकलाब जिंदाबाद ।।

छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
का प्रचार पत्र में 06-02-1991

आज की ताजा खबर

अखबार का हॉकर सड़क पर चिल्ला रहा है,
चिल्ला-चिल्लाकर लोगों को बता रहा है,
आज की ताजा खबर.....
कि
वह बच नहीं पाया इस बार
सफल हो गयी है उसे पकड़ने में वर्तमान सरकार
वह,
जो है एक अपराधी खुँखार
सनसनी खेज आरोपों से लैस
वह रातबिरात दिन-दहाड़े
घुमता फिरता था,
खेतों में, खलिहानों में, खदानों में,
मिलों में, कारखानों में,
मजदूरों को उनकी औकात का
एहसास कराता था,
जब चाहे, तब कहीं भी काम बंद हो जाता था।
आम लोग उसकी बात समझकर
मानने लगे थे।
हिम्मत से सीना तानने लगे थे।
बदतमीज हो गये थे इतने,
कि सेठों, अफसरों, मिल-मालिकों पर
रौब झाड़ने लगे थे।
एक के बाद एक
कारखानों, गाँवों और झोंपड़पट्टियों में-
लाल-हरा झंडा गाड़ने लगे थे।
कांपने लगी थी पूँजीपतियों की तिजोरियाँ,
ठेकेदारों का हाथ बार-बार अपनी जेबें सम्हालता था,
दारू की दुकानों की पेटियाँ भर नहीं पाती थी,
उसके आतंक से,

धन्ना सेठों की नींद उड़ जाती थी,
भला हो वर्तमान सरकार का
जिसने उसे पकड़ लिया,
और उसे लोहे की सलाखों के पीछे डाल दिया।
अब सब कुछ सुरक्षित हो गया है,
टलगया है खतरा,
अमन चैन हो गया है चारों ओर
थम गया है शोर
ओम् शाँति: शाँति: शाँति: ।

श्याम बहादूर 'नम्र'
जनवादी कवि श्रम निकेतन, जमुई
अनपपुर, झारखंड

कैइसे कानून बनायेस सरकार बाबू....

कैइसे कानून बनायेस सरकार बाबू,
कैइसे कानून बनाये जी।
एगा सरकार बाबू,
कैइसे कानून बनायेस जी।
कावर कलम राखे हस बाबू,
कावर राखे हस दवात जी,
कावर राखे कापी हो बाबू,
कावर कुर्सी में बैठेस जी,
कानून कायदा के नइये ठिकाना,
मजदूर के ऊपर शोषण बरसाना,
सरकार बाबू कैइसे कानून बनायेस जी,
एगा सरकार बाबू गा,
कैइसे कानून बनायेस जी।

8 घंटा ले हमन कमाथन बाबू,
खून पसीना बोहाथन जी,
आगी पानी ला कमाके जी ला उबारथन बाबू,
तबले लइका हमर भूख मरथे जी।
मुक्ति के आवाज मजदूर उठाथे तब,
ये पुलिस हा जेल में बंद देथे।
सरकार बाबू, कैइसे-कैइसे कानून
बनाये सरकार बाबू।
सूत के उठथन सरकार बाबू,
कंपनी में ड्युटी हमन जाथन जी,
लोहा लक्कड़ ला हम उठाथन बाबू,
तबले पसिया बिना तरसथन जी।
कैइसन कानून बनायेस सरकार बाबू।
सूत के उठथन हमन हंर बाबू,
लांघन भूखन हमन ड्युटी जाथन जी,

लोहा लक्कड़ ला हमन उठाथन बाबू,
लोहा मजदूर के ऊपर गिरथे जी,
वोही में दबके हमन मर जाथन,
मजदूर लाश नजर आथे सरकार बाबू,
कैइसे कानून बनायेस जी।

कौशिल्या बाई
ए. सी. सी. सीमेंट फैक्ट्री, जामुल
में कार्यरत ठेका मजदूर

नारी कहेली नर से परदा हटाव घर से

सुनी-सुनी मजदूर के बेअनवा
नयनवां तरसे। 2।
मजदूर किसान भाई हम सब भाई भाई
मिली जुली जइले रन के मैदनवाँ,
नयनवां तरसे।
नारी कहेली नर से परदा हटाव घर से
हमहू चलवा रन के मैदनवाँ
नयनवां तरसे।
जैसे दुर्गावती रहली, अंग्रेजवा से लड़त रहली,
ओइसे हमहूँ चलवा रन के मैदनवाँ,
नयनवां तरसे।
लड़िका भूखाइल गईले,
शासन चिकाई गईले,
नाहीं सुने मजदूर के बेयनवां,
नयनवां तरसे।
कलयुग में काली बनबे,
रनवा में तेगा धरबे,
कटबे हम पापिन के गरदनवां,
नयनवां तरसे।
बालक कहेले पापा झंडा बनाव,
हमत चलब तोहरे संघवा,
नयनवां तरसे।
कहे राम लखन भाई जिला बैशाली,
भाई, लिखेला मजदूर के बेयनवां,
नयनवां तरसे।

रामलखन
मिम्पलेक्स, टेडेसरा में कार्यरत
श्रमिक

लाल हरा झंडा हमारा

लाल हरा झंडा हमारा,
साथियों आओं संगठन बनाये ।।
एकता का यही निशानी,
लाल हरा है जग में नूरानी ।।
लाल रंग शहीद कुर्बानी,
हरा रंग हेधरा की निशानी ।।
किसान-मज़दूर सभी भाई-भाई,
मिलजुल लड़ेंगे लड़ाई ।।
ये झंडा है दुइ रंग वाला,
लाल-हरा झंडा हमारा ।।
लोभ लालच रहता किनारा,
सच खातिर लड़ता विचारा ।।
भाई शहीद लोग कहते पुकारे,
लाख दुश्मन अगर टकराये ।।
पाँव पीछे कभी न हटाना,
चाहेसीने पर गोली हो खाना ।।
इन पापियों से मुक्ति खातिर,
आवो साथी हम संगठन बनाये,
लाल-हरा झंडा हमारा ।।

मकसूदन
सिम्पलेक्स. टेडमग में कार्यरत

किसका कानून, किसका नेता

कनवा होगे कानून अऊ भंरा हे सरकार,
नई चिन्हे गरीब जनता ला अऊ सुने पुकार।
आजकल के ठुठवा नेता हांवे डोंग हजार,
कहिथे सबला मिलके रह लड़वो बीच बाजार।
खोजे उधारी पैसा नई मिलय मिलवो तहूं ब्याज में,
लोग लइका ला कइसे जियाबो घुंसखोरी के राज में।।

[illegible]
सिम्पलेक्स. उरला में कार्यरत मजदर

कहानी : सरकार मालिक की……

पगला गया है मूलचंद-केडिया, पटवा के राज में।
होती नेता मंत्रियों की नीलामी, रिश्वत के बाज़ार में।।
मजदूर अपनी जब मांग करते,
बेईमान अधिकारी खूब दलाली करते।
जरा संभल के। सोच समझ के।
आयेगा बुरा दिन तुम्हारा हम मजदूरों के राज में,
हो, हो हम मजदूरों के राज में।
पगला गया................ ।
किसान मजदूर भटक रहे,
रोजी-रोटी के लिए तरस रहे,
ऐसा न होगा। अब न चलेगा।
हमें थमना होगा वीर नारायण, काले अंग्रेजों के राज में
हो, हो काले अंग्रजों के राज में ।।2।।
पगला गया................ ।

पटवा के मंत्री उपलब्धियाँ गिनाते ।
जातियों के नाम पर दंगे कराते ।।
आडवानी जी पूजते झुलेलाल जी,
करते बेइमानी राम नाम पर इन शोषकों के राज में,
हो, हो शोषकों के राज में ।।2।।
पगला गया................ ।

भीमराव बागड़े
छत्तीसगढ़ केमिकल्स मिल्स मजदूर संघ
के कार्यकर्ता

सरकार के घर में अंधेरी रात

चांदनी थी तेरे आंगन में, अब अंधेरी आ गया ।
काली बादल बन मजदूरों ने चारों दिशा पे छा गया ।।
मजदूरों का हक तू दे दे, इसमें है सबका भलाई ।
सामने क्यों नहीं आते, क्या करते हो मुंह छुपाई ।।
मजदूर जब रूठ जायेंगे, तो तो तुम कहीं नहीं छुप पाओगे ।
इसी मजदूर ने तेरे आंगन की रोशनी हटा दिया ।
चांदनी थी तेरे आंगन में , अब अंधेरी आ गया ।।
शोषणवादी का है ये सरकार, मजदूरों के लिये बिल्कुल बेकार ।
किसानों को धोखा देने वाले हैं, कर्ज माफी केवल इनके बहाने हैं ।।
अब देख तेरे आंगन का फूल मुरझा गया ।
चांदनी थी तेरे आंगन में अब अंधेरा आ गया ।।
किसानों का अब मजदूर करेंगे भला,
देख लेना तेरा जान देंगे जला,
मजदूरों का ही बनेगा सरकार,
जिससे सम्हलेगा सबका कारोबार ।।
मजदूरों ने सबका मन बगिया में फूल खिला दिया ।
चांदनी थी तेरे आंगन में अब अंधेरी आ गया ।।

हर जोर जुल्म की टक्कर में, संघर्ष हमारा नारा है।
तुमने मांगे ठुकराई है तुमने तोड़ा है हर वादा
छीनर हमसे सस्ता अनाज, तुम छटनी पर हो आमादा
लो अपनी भी तैयारी है लो हमने भी ललकारा है
हर जोर जुल्म की टक्कर में, संघर्ष हमारा नारा है।

प्रकाशक : लोक साहित्य परिषद द्वारा छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
सी.एम.एस.एस. आफिस, दल्ली-राजहरा, जि. दुर्ग (छ. ग.) 491228
मुद्रक : साहू प्रिंटिंग प्रेस, मेन रोड, दल्ली-राजहरा

प्रकाशन काल : जनवरी 04 सहायता राशि : 1.00 रूपये